SOCIAL CHANGES IN INDIA IN PRESENT SCENARIO: ROLE OF EDUCATION AND TEACHARS

कुमार गौरव

सहायक प्राध्यापक

(शिक्षाशास्त्र विभाग)

पार्वती विज्ञान महाविद्यालय,

मधेपुरा।

E-mail: vickyg215@gmail.com

सुजीत कुमार

सहायक प्राध्यापक

(शिक्षाशास्त्र विभाग)

पार्वती विभाग महाविद्यालय,

मधेपुरा।

E-mail: sujeetkumarr1987@gmail.com

सारः– समाज के रुप में निरन्तर परिवर्तन हुआ करता है। किसी भी समाज का जो रुप आज से एक दशाब्दी पहले था, वह आज नही है। सभी समाजों में परिवर्तन निश्चय ही होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि समाज निरन्तर परिवर्तनशील रहा है जो हमेशा अनिश्चित होता है। चूकि शिक्षा व समाज का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। इसीलिए विभिन्न समाजों में शिक्षा का विभिन्न स्वरुप होता है। शिक्षा का उपयोग समाज में वांछित परिवर्तन लाने के लिए एक साधन के रुप में किया जाता है। हमारे सामाजिक,नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण और प्रसारण शिक्षा के माध्यम से ही होता है। सामाजिक भावनाओं का जागरण तथा व्यक्ति में एकता, प्रेम, बंधुत्व और अन्य मूल्यों के महत्व के बारे में जागरुक शिक्षा के माध्यम ही होता है। शिक्षा सभी लोगों को समाज का हिस्सा बनने के लिए जागृत करती है और वे दुनिया को समाज के रुप में योगदान दे सकते है। सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक विकास के एक एजेंट या साधन के रुप में शिक्षा की भूमिका को आज व्यापक रुप से मान्याता प्राप्त है। क्योंकि शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन होता है, अतः यह शिक्षा शिक्षक से जोर दी जाय तो सामाजिक परिवर्तन की गति और तीव्र हो जाती है। शिक्षक न सिर्फ लघु समाज (विद्यालय) का नेता होता है वरन् उसका समाज में भी नेतृत्व स्वीकर किया गया है। क्योंकि शिक्षक अपने संतुलित व्यक्तित्व द्वारा समाज को प्रभावित करता है। वह अशिक्षित समाज को उपयोगी विचारों से अवगत कराते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा में हमेशा योगदान देता है।

कीवर्डः– सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा तथा शिक्षक

परिचयः– सामाजिक परिवर्तन में दो शब्द है– प्रथम सामाजिक और दूसरा परिवर्तन। सामाजिक शब्द से आशय है– समाज से संबंधित। मैकाइवर ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल बताया। परिवर्तन से अभिप्राय भिन्नता का होना समझा जाता है। फिशर ने परिवर्तन को संक्षेप में पहले की अवस्था अथवा अस्तित्व के प्रसार के अन्तर के रुप में परिभाषित किया है। सामाजिक परिवर्तन समाज से संबंधित होता है। चूकि परिवर्तन जीवन का नियम है और समाज में हमेशा सामाजिक संबंधों का निर्माण सामाजिक अन्तः कियाओं के द्वारा आये दिन लोगों की सामाजिक परिस्थिति जहॉ सामाजिक स्तरण का आधार धन है, में परिवर्तन होते रहता है। जिसके

परिणमस्वरुप सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन स्वाभाविक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन दशाओं पर मानव समाज आश्रित होता है, वे निरन्तर परिवर्तित होती जा रही है। वास्तविकता तो यह है कि परिवर्तन जहाँ एक तरफ अवश्यम्भावी है वहीं दूसरी और आवश्यक भी है। सामाजिक कान्ति और सामाजिक विघटन दोनों परिवर्तन के फलस्वरुप ही होते हैं। इस प्रकार परिवर्तन प्रत्येक समाज के लिए एक आवश्यक घटना है,क्योंकि प्रत्येक समाज प्रगति चाहता है जिसकी प्राप्ति इन्हीं परिवर्तन से हो पाती है। जहॉ एक तरफ परिवर्तन का प्रभाव सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ता है वहीं दूसरी ओर इसका प्रभाव समाज के अन्य मूलभूत निर्णायक तत्व जैसे परिवार, राज्य व सामाजिक संस्थाओं पर पड़ता है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार प्रणाली थी, लेकिन आज औद्योगिक विकास के कारण व्यक्तिवादी परिवारों में वृद्धि हो रही है। आज विश्व के सभी राज्य प्रजातान्त्रिक सरकार की कामना करता है, जबकि पहले राज्यों में एकतंत्रवादी शासन था। इसी प्रकार आज विवाह प्रथा में भी परिवर्तन देख सकते है, पहले लोग सवर्ण विवाह को उचित मानते थे। संगोत्र सपिण्ड विवाह निषेध था। जबकि आज विपरीत व्यवहार हो रहा है।

भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तनः— चूकि सामाजिक परिवर्तन किसी भी समाज का स्वभाव है। भारतीय समाज भी इसका अपवाद नही है। इसलिए ऐतिहासिक सर्वेक्षण में भी प्रत्येक काल के आर्थिक, राजनीतिक, विचारधारात्मक तथा अन्य परिवर्तनों के साथ—साथ सामाजिक परिवर्तन देखे जा सकते है। 1947 से पूर्व भारतवर्ष में सामाजिक प्रगति नाम मात्र की रही होगी, लेकिन आज हमें समाज का नया रुप मिलता है। इस परिवर्तन के दोड़ में देश में भी राज्य सदैव बनते—बिगड़ते रहे, कभी छोटे—छोटे राज्य मिलकर बड़े—घड़े राज्य बन गए, तो कभी साम्राज्यों का विघटन होकर छोटे—छोटे राज्यों की स्थापना हुई। इन दोनों ही प्रकार की प्रवृतियों का सामाजिक संरचना पर भिन्न भिन्न प्रभाव पड़ा।

भारत में सामाजिक दार्शनिक विचारधारा के अनुशीलन से भी यह स्पष्ट होता है कि यहा पर विचारों के क्षेत्र में बराबर परिवर्तन होता रहा है। रुढ़ियों और परम्पराओं के क्षेत्र में भी बराबर परिवर्तन देखा जा सकता है। हमारे रहन—सहन, रीति—रिवाज, संस्कृति,परिवार विवाह, जाति की संस्था , सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था सभी में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। संयुक्त परिवार कमशः छोटे होते गए और केन्द्रक परिवार उनका स्थान लेते जा रहे हैं। स्त्रियों से संम्बन्धित सामाजिक विधान बनने के बाद से विवाह की संख्या में भी तेजी से परिवर्तन हुआ है।बाल विवाह की प्रथा लगभग समाप्त हो गयी है। विधवा—पुनर्विवाह होने लगे है। सम्पत्ति में स्त्रियों का अधिकार मिल चुका है। सामाजिक परिवर्तन हो रहा है किन्तु अभी भी यह परिवर्तन पश्चिम देशों से बहुत पीछे है।

शिक्षा की भूमिकाः— भारतीय शिक्षा का इतिहास बहुत लम्बा है। उसके विकास पर कई सामाजिक स्तरणों या संरचनाओं के प्रभाव पड़े है और आज भी पड़ रहे है। उसमें आजकल बहुत सी नई गतिविधियॉ चल रही है, कई परिवर्तन हुए है, और हो रहे है। आजकल प्रायः सभी लोग सामाजिक परिवर्तन और उसको लाने में शिक्षा की भूमिका की चर्चा करते है। वे कहते है कि शिक्षा वह शक्तिशाली और स्थायी महत्व का कारक या अभियंत्र है जिससे समाज में सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।क्योंकि शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास की व्याख्या करतो है। वह विकास की तकनीकी बताती है। बाहरी दुनिया में आत्मनिर्भरता की कला शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन यदि वर्तमान भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन

लाने में शिक्षा की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, तो आपको यह भी जानना आवश्यक है कि उसके मार्ग में बहुत सी गम्भीर बाधाएँ आज भी उपस्थित है जिनके फलस्वरुप शिक्षा अपना परिवर्तन वाला कार्य भली–भॉति नही कर पा रही है। आज की शिक्षा में मूलभूत बातों का कोई महत्व नजर नहीं आता है। प्राचीन काल में शिक्षा ज्ञानदान की पुण्य परंम्परा थी। योग्य आचार्य,जो अपने जीवन में अनेक गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया करते थे। अनेक अनबूझ समस्याओं की समझ रखते थे। वे निःस्वार्थ भाव से विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा प्रदान करने में समर्थ एवं सक्षम रहते थे। परन्तु परिवर्तन की दौड़ में जब यह परम्परा विलुप्त हुई ओर इसके स्थान पर अन्य स्वार्थयुक्त परम्परा उठ खड़ी हुई ह। समस्याओं का जमघट खड़ा हो गया है। तलवार धारदार होती है तो दुश्मन का गला काट देती है, इसका ठीक उलटा प्रयोग करने पर अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ सकता है। आज शिक्षा की स्थिति कुछ ऐसी ही हो गई है। पहले शिक्षा दान की पुण्यपरम्परा थी, अब यह ऊँचे दामों में बेचने का व्यवसाय बन गई है। शिक्षा का मूल उद्देश्य खो गया है। जिस शिक्षा से सही समझ विकसित होती थी,चरित्र का महान बल पैदा होता था, बिनम्रता एवं शिष्टता का नया प्रतिमान गढ़ा जाता था, उसमें आज बिगड़े हुए उद्दंड, उच्छृंखल छात्रोंकी संख्या बढ़ती जा रही है। ऑकड़ों के आइने में प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों के कियाकलापों को देखें तो हमारी नजर शरमसार हो जाएगी। माध्यमिक से उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर के किशोर–किशोरियों की गतिविधियां कुछ ऐसी हो गई है, जिन्हें सभ्य समाज में बयान नही किया जा सकता है। स्कूलों में चरित्र–निर्माण का पाठ तो गायब ही हो गया है। उसके बदले उनकी कोमल एवं संवेदनशील मानसिकता जिस अश्लीलता एवं उद्दंडता में शुमार हो रही है, उसे देख दिल दहल उठता है। बिडंबना ही है कि कल के भविष्य का वर्तमान इस रुप में व्यतीत हो रहा है जिसके द्वारा हम सामाजिक परिवर्तन की उम्मीद कर रहे है।

शिक्षा समाजशास्त्री कार्ल मैनहीम तथा फ्रेड क्लार्क शिक्षा को एक समाज सुधार आन्दोलन के रुप में प्रयोग में लाना चाहते थे ताकि एक बेहतर समाज को बनाया जा सके। गॉधो जी का विचार कि एक बुनियादी पाठशाला को समुदाय में अहिंसात्मक सामाजिक क्रान्ति के भाले की नोंक बनना चाहिए। आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह खेद का विषय है कि आज भारत में शिक्षा व्यक्ति की लम्बवत् और क्षैतिज गत्यात्मकता के लिए हीं अधिक कार्य करती है। समाज के परिवर्तन,समाज सुधार और सामाजिक पुनर्रचना के लिए उतना नहीं।

शिक्षक की भूमिकाः– शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन होता है, अतः यह शिक्षा शिक्षक से जोड़ दी जाय, तो सामाजिक परिवर्तन की गति और तीव्र हो जाती है। शिक्षक न सिर्फ लघु समाज (विद्यालय) का नेता होता है,वरन् उसका समाज में भी नेतृत्व स्वीकार किया गया है,क्योंकि अब विद्यालय को सामुदायिक विद्यालय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। अगर हम प्राचीन शैक्षिक इतिहास का आकलन करें, तो ज्ञात होगा कि देश तथा विदेश के शैक्षिक चिंतकों, विचारकों द्वारा समाज परिवर्तन करने में नयी दिशा मिली। शिक्षक समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान करता है।सामाजिक परिवर्तन की इस प्रकिया में शिक्षक के महत्व को भूला नही जा सकता । वह इस प्रकिया को गति प्रदान करने हेतु कुछ विशिष्ट गुणों का प्रयोग करते हुए विशिष्ट कार्य करने को उद्यत होता है। वह एक सृजनशील नेता के रूप में अपनी जीवन शैली जनतांत्रिक सिद्धान्तों पर लेकर चलता है और समाज उसी का अनुशरण करते है। उसके द्वारा ऐसा शिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जो बालकों में तर्क, चिंतन, मनन, विश्लेषण एवं संश्लेषण शक्ति का विकास कर सके।

आज सभी शिक्षकों को सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता बनाना होगा तभी भारतीय समाज का सामाजिक परिवर्तन हो सकता है। आज अधिकांश बी.एड. कॉलेजों में विशेषकर सैकड़ों प्राइवेट बी.एड. कॉलेजों में बहुत घटिया,भ्रष्ट तथा अनियमिताओं से भरपूर तौर–तरीकों से, एक प्रकार से फर्जी बी.एड. प्रशिक्षण आज भारत भर में प्रदान किया जा रहा है। उनमें आधुनिक मूल्यों, दृष्टिकोण, तर्क,सत्यता, कुशलता तथा शैक्षिक स्तर को बनाये रखने का कोई प्रयास नहीं हो रहा है। इस ओर सभी को ध्यान देना होगा। इस पर गहन चिंतन की आवश्यकता है और तब हम समाज में सही सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं।

निष्कर्षः– निष्कर्ष के तोर पर यही कहा जा सकता है कि **Social change** एक बहुत ही विस्तृत **Term** है। समाज–शास्त्रियों की ढ़ेर **Definitions** का बोझ न ढ़ोते हुए थोड़े से सरल शब्दों में आपको बताने की कोशिश की गयी है कि सामाजिक परिवर्तन समाज के आधारभूत परिवर्तनों पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत एवं कठिन विषय है। जिसमें शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के प्रभावशाली उपकरणों में से एक बन गई है। इसनें विकास के लिए लोगों की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाया है। आज भारत में सैकड़ों विश्वविद्यालय है, कई राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्थाएँ है, हजारों कॉलेज है, हजारों उच्च माध्यमिक विद्यालय है और लाखों प्राथमिक शालाएँ है,ये इस बात के प्रमाण कहे जा सकते है कि अब शिक्षा का बहुत विकास हो गया है और उसके द्वारा सामाजिक परिवर्तन किया जा रहा है। और इस परिवर्तन के दोड़ में उचित शिक्षा एवं उसको गति प्रदान करने वाला महापुरूष एक शिक्षक ही होते है, जिसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की गति और अधिक तीव्र हो जाती है। एक शिक्षक के द्वारा ऐसे छात्र तैयार किये जाते है,जो विवेकशील तथा साहसी हो, परिवर्तन करने में सक्षम हो एवं परिवर्तन के कारण नवीनता को स्वीकार करने, उन्हे समाज तक पहुचाने की शक्ति रखते हों।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार–प्रो. एस.पी. रूहेला, हेड और डीन शिक्षा संकाय, जा.मि.इस्लामिया केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

2. शिक्षा के सिद्धान्त तथा विधियॉ–डॉ. जे.एस. वालिया, भूतपूर्व प्रिंसीपल खालसा कॉलेज ऑफ एजुकेशन अमृतसर, पंजाब।

3. अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका– डॉ. प्रणव पण्डया, शान्ति कुंज उत्तराखण्ड।

4. सामाजिक परिवर्तन बनाने में शिक्षा की भूमिका.

Https://www.Studymoose.com.

5.अंतर्रास्ट्रीय शैक्षिक ई. जर्नल. त्रैमासिक **ISSN2277-2456.** **Https://www.sociology.guider.com.**

6. **http://www.waldenu.edu/about/social.change/impact.report-1013**